आयोजन समिति

प्रो. मीना श्रीवास्तव
निदेशक एवं समन्वयक
मोबाइल : 7049035555

प्रो. मधुबाला कुलश्रेष्ठ
सह–समन्वयक
मोबाइल : 9425341206

प्रो. के. रतनम्
आयोजन सचिव
मोबाइल : 9425338280, 8839679817

प्रो. संजय स्वर्णकार
अकादमिक सचिव
मोबाइल : 9301116371, 7000396363

डॉ. अशोक नरवरिया
सदस्य
मोबाइल : 9407212968

निवेदक

इतिहास विभाग
शास. कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर
स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर

चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी।
बुंदेले हर बोले के मुंह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

औपनिवेशिक भारत और भारतीय प्रतिरोध

28 व 29 जनवरी, 2019

संरक्षक
डॉ. बी.एम. कुलश्रेष्ठ
प्राचार्य

निदेशक एवं समन्वयक
प्रो. (श्रीमती) मीना श्रीवास्तव
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष

आयोजन सचिव
प्रो. के. रतनम्
प्राध्यापक

सह–समन्वयक
प्रो. मधुबाला कुलश्रेष्ठ
प्राध्यापक

अकादमिक सचिव
प्रो. संजय स्वर्णकार
प्राध्यापक

आयोजक
इतिहास विभाग
(स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध केन्द्र)
शास. कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर

ग्वालियर : एक परिचय

ग्वालियर मध्यप्रदेश का हृदयस्थल है। प्राचीन काल में इसे गोपालगिरी, गोपाचल, गोपगिरी, गोपाद्रि आदि नामों से जाना जाता था। ग्वालिपा ऋषि के नाम पर ही ग्वालियर का वर्तमान नाम पड़ा। यहाँ एक ओर पाषाण कालीन चित्र मिले हैं, तो दूसरी ओर यह क्षेत्र प्राचीनकाल से ही विभिन्न राजवंशों की कर्मस्थली रही है। मध्यकाल में इसे दक्षिण का प्रवेश द्वार समझा जाता था। मध्यकाल के शासकों ने राजनैतिक व आर्थिक दृष्टि से इस पर आधिपत्य के महत्वपूर्ण प्रयास किये। यहाँ संगीत, कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में नए प्रतिमान स्थापित किए जिससे इस नगर की अपनी विशेष पहचान बनी। ग्वालियर की ऐतिहासिक धरोहर शांलभंजिका प्रतिमा की मुस्कान की तुलना मोनालिसा की मुस्कान से की जाती है। संगीत सम्राट तानसेन एवं सूफी संत मोहम्मद गौस की उपलब्धियाँ इस नगर की प्रमुख सांस्कृतिक धरोहर हैं। आधुनिक काल में सिंधिया शासकों ने इसे नवरूप प्रदान किया एवं रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान से यह तपोभूमि धन्य हो गई है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में ब्रिटिश राज्य का ग्वालियर के अनेक आन्दोलनकारियों ने प्रतिरोध करते हुए भारतीय स्वतंत्रता में अपना योगदान दिया।

शोध संगोष्ठी का उद्देश्य

औपनिवेशिक भारत से तात्पर्य भारतीय उप महाद्वीप के उस भू–भाग से है जिस पर यूरोपीय पारस्परिक संघर्ष के बाद ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित हुआ। ब्रिटिश उपनिवेश स्थापित होने से स्वतंत्रता प्राप्ति तक भारतीय राजाओं, किसानों, वनबासियों, श्रमिकों, विचारकों, सामाजिक–धार्मिक संस्थाओं आदि ने निरन्तर प्रतिरोध किया। इस प्रतिरोध के वैचारिक कालखण्डों में विभक्त करने पर हम देखते हैं कि क्रमशः किसान प्रतिरोध, राजे–रजवाड़ों, सैनिक, क्रांतिकारी, उदारवादी, उग्रवादी, समाजवादी, वाम अथवा साम्यवादी, गांधीवाद, सम्प्रदायवादी प्रतिरोध देखने को मिलता है। समय के अनुरूप नेतृत्व एवं स्वरूप परिवर्तन होते रहे, लेकिन भारतीय जन प्रतिरोध में संलग्न रहे; जिसके कारण किसी भी राष्ट्रीय संघर्ष में इतनी अधिक जन हानि नहीं हुई।

पाश्चात्य विचारों एवं विशेषकर प्राच्यवादियों ने भारत और भारतीयों के औपनिवेशिक शासन के प्रति प्रतिरोध की जो छवि प्रस्तुत की, इस दृष्टि को देशस्थ विमर्श और शोध के द्वारा कि भारत निरन्तर संघर्षरत रहते हुए औपनिवेशिक शासक का प्रतिरोध करता रहा, इस तत्व एवं दृष्टि को स्थापित करना शोध संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य है।

शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर में आयोजित राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में **औपनिवेशिक भारत और भारतीय प्रतिरोध** विषय पर निम्न बिन्दुओं पर शोध पत्र आमंत्रित किये जा रहे हैं :–

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी के उपविषय :

- उपनिवेशिक स्थापना एवं पारस्परिक संघर्ष।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन और प्रतिकार।
- गांधी युगीन प्रतिकार।
- औपनिवेशिक भारत और कृषक आंदोलन।
- औपनिवेशिक भारत में आदिवासियों के द्वारा प्रतिकार।
- भारतीय रियासतों का प्रतिकार।
- भारतीय प्रतिकार और राजनीतिक विचारधाराऐं।
- भारतीय पत्रकारिता और औपनिवेशिक शासन के प्रति प्रतिकार।
- भारतीय नेतृत्व एवं प्रतिकार।
- भारतीय संस्थाओं का औपनिवेशिक प्रतिकार।
- औपनिवेशिक विकास और भारतीय संसाधनों का दोहन।
- औपनिवेशिक भारत में सामाजिक–धार्मिक आंदोलन।
- सैन्यवाद का औपनिवेशिक प्रतिकार।
- विविध वैचारिक आंदोलनों का औपनिवेशिक प्रतिकार।
- भारतीय इतिहास का विकृतिकरण एवं भारतीय प्रतिक्रिया की प्रासंगिकता।
- औपनिवेशिक भारत में शिक्षा, कला, साहित्य, संस्कृति विज्ञान का विकास।
- औपनिवेशिक प्रशासन व्यवस्था एवं लोक कल्याण की भावना।
- औपनिवेशिक भारत में वंचित समाज और उनका प्रतिकार।
- औपनिवेशिक भारत में लोक जीवन एवं संस्कृति।

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषय पर शोध पत्र समय सीमा में प्राप्त होने के उपरांत मूल्यांकन के पश्चात् ही वाचन हेतु स्वीकृत किये जावेंगे।

शोध पत्र :– शोत्र पत्र एवं शोध सारांश कम्प्यूटर टाइप, जो कि ए–4 साईज के कागज पर हिंदी में फोंट साइज 14 (कृतिदेव 10) अथवा अंग्रेजी में फोंट साइज 12 (Times New Roman) वर्ड में एक ओर टंकित होगा, जिसकी सी.डी. के रूप में सॉफ्ट कॉपी भी आवश्यक रूप से दिनांक 31.12.2018 तक उपलब्ध करायें। अन्यथा समय की उपलब्धता के अनुसार ही शोध पत्र का अवसर प्रदान किया जा सकेगा। समिति द्वारा चयनित शोध पत्रों का प्रकाशन ISBN के साथ किया जावेगा।

शोध पत्र निम्नांकित ई–मेल पर भेजें :

meena.shrivastava0@gmail.com

पंजीयन शुल्क : पंजीयन शुल्क प्राध्यापक/फैकल्टी मैम्बर रू. 1000/– तथा शोध छात्र एवं अतिथि विद्वान रू. 500/– दिनांक 31.12.2018 से पूर्व भेजने पर निम्नांकित खाते में NFT अथवा E-Banking द्वारा ही स्वीकार होगा तथा संगोष्ठी स्थल पर पंजीयन शुल्क प्राध्यापक/फैकल्टी मैम्बर रू. 1200/– तथा शोध छात्र एवं अतिथि विद्वान रू. 700/– का भुगतान नगदं देय होगा।

खाता धारक का नाम : प्रो. मीना श्रीवास्तव

खाता क्रमांक : 53006064090

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, ब्रांच अलापुर, ग्वालियर

आई.एफ.एस.सी. कोड : SBIN0030258

पहुँच मार्ग : ग्वालियर रेल एवं सड़क मार्ग द्वारा देश/प्रदेश के सभी नगरों से तथा दिल्ली एवं मुम्बई से वायु मार्ग से भी आवागमन सुलभ है। संगोष्ठी स्थल ग्वालियर रेलवे स्टेशन एवं बस स्टैण्ड से लगभग 7 किमी. की दूरी पर कम्पू क्षेत्र में स्थित है, जिसके लिए आवागमन हेतु कई साधन उपलब्ध है।

यात्रा व्यय : शोध संगोष्ठी में आमंत्रित अतिथियों को ही शासन के नियमानुसार द्वितीय श्रेणी रेल/बस का टिकिट प्रस्तुत करने पर किराया भुगतान किया जाएगा। चूंकि संगोष्ठी स्वशासी व्यवस्था के अन्तर्गत आयोजित है अतः **प्रतिभागियों को किसी प्रकार के यात्रा भत्ते की व्यवस्था नहीं है।**

कर्तव्य अवकाश : कर्तव्य अवकाश की पात्रता शासन के नियमानुसार होगी।

आवास व्यवस्था : संगोष्टी हेतु आमंत्रित अतिथियों के लिए दिनांक 28.01.2019 से 29.01.2019 की सायं तक आवास व्यवस्था आयोजकों की ओर से निःशुल्क उपलब्ध रहेगी। आवास व्यवस्था दिनांक 31.12.2018 तक समन्वयक/सचिव को अनिवार्य रूप से आपके द्वारा आगमन की पूर्व सूचना प्रदान करने पर ही की जा सकेगी।